International Journal of Social Research and Development
www.socialsciencejournal.net
Online ISSN: 2664-8709, Print ISSN: 2664-8695
Received: 04-09-2022, Accepted: 20-09-2022, Published: 06-10-2022
Volume 4, Issue 2, 2022, Page No. 47-48

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डॉ0 केशवराव बलिराम हेडगेवार की स्वतंत्रता आंदोलन में भूमिका

रेखा चौधरी[1], यशवन्त सिंह[1], केशर सिंह[2]
[1] इतिहास विभाग, जे0एस0 विश्वविद्यालय, शिकोहाबाद, फिरोजाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत
[2] फार्मेसी विभाग, डॉ0 भीमराव आम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
वंदे मातरम् से लेकर क्रांतिकारी मार्ग, गांधीवादी पथ एवं स्वातंत्र्य का संपादन करते हुए डॉ0 हेडगेवार साम्राज्यवाद विरोधी आंदोलन के एक कर्मठ सिपाही ही सिद्ध नहीं हुए बल्कि उनका परिपक्व एक चिंतन मन और मस्तिष्क राजनैतिक व्यवहारों सामाजिक सांस्कृतिक परिस्थितियों एवं विश्व के परिदृश्य में भारत वर्ष के पराभव पर भी सतत् मंथन कर रहा था। परम पूज्य डॉ0 हेडगेवार जी द्वारा प्रारंभ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ निरंतर बलवान हो रहा है तथा उनके कारण हिन्दू राष्ट्र का वैभव काल निकट आ रहा है। हिंदू राष्ट्र संगठित करने का प्रारम्भ डॉ0 जी ने अपनी विजयिष्णु मनोभावना के अनुरूप सिमोल्लंघन के शुभ मुहूर्त में किया। डॉ0 हेडगेवार ने भारत की स्वतंत्रता और अखंडता के लिए जीवन पर्यंत संघर्ष किया तथा संघ के माध्यम से देश को हिंदुत्व की एकता का संदेश दिया। हिंदुत्व से उनका तात्पर्य केवल हिंदू होने से नहीं बल्कि जो भी नागरिक हिंदुस्तान में रहते हैं वे सभी हिंदुत्व की पहचान है।

मूल शब्दः स्वातंत्र्य, परिपक्व, चिंतनशील, परिदृश्य, सतत् मंथन विजयिष्णु, सिमोल्लंघन

प्रस्तावना
डॉ0 हेडगेवार प्रारंभ से ही स्वतंत्रता के लिए प्रयासरत रहे। उन्होंने देश की स्वाधीनता के लिए जेल की यातनाएं भी सही, लेकिन इन सबसे उनकी देशभक्ति व स्वतंत्रता के प्रयासों में कोई कमी नहीं आई बाहर आकर भी पुनः अपने कार्य में जुट जाते तथा जगह–जगह पर सभाऐं करके देश में जागृति लाने का प्रयास करते रहे। डॉ0 हेडगेवार कितने लोकप्रिय थे, उनका व्यक्तित्व कितना आकर्षण था और उनकी वाणी में कितना ओज था इनका अंदाज उस सभा में जुटे जन समुदाय से लगाया जा सकता है। जो बारिश की परवाह किए बगैर डॉ0 हेडगेवार की झलक पाने और उनका भाषण सुनने के लिए बेताब थी। डॉ0 हेडगेवार ने गांधी जी के साथ मिलकर अनेक देशव्यापी आंदोलन चलाए डॉ0 हेडगेवार ने अपने मत को कभी भी प्रतिनिधियों के ऊपर थोपने की जगह लोकतांत्रिक प्रक्रिया का उपयोग करना बेहतर समझा।

शोध पत्र के उद्देश्य
1. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और स्वतंत्रता आंदोलन एक दूसरे के पूरक इसका मूल्यांकन करना।
2. डॉ0 हेडगेवार एक विलक्षण प्रतिभा इसका अध्ययन करना।
3. डॉ0 हेडगेवार की जन समुदाय में बढ़ती लोकप्रियता इसका विश्लेषण करना ।
4. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का जन्म क्या स्वतंत्रता आंदोलन के लिए हुआ इसका अध्ययन करना।

साहित्यावलोकन
1. डरविन खन्ना – राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ– लक्ष्य और कार्य, सुरुचि प्रकाशन दिल्ली यह पुस्तक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यों का परिचय देती है डॉ0 हेडगेवार ने जो स्वपन देखा था, उनको साकार करने का लक्ष्य इस पुस्तक में दिया गया है।
2. डॉ0 हरीश चंद्र वर्थवाल – राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एक परिचय, सुरुचि प्रकाशन दिल्ली, डॉ0 हेडगेवार के जीवन तथा आदर्शों के साथ राष्ट्रीय स्वयं सेवकों का भी परिचय दिया गया है
3. आजादी के आंदोलन में संघ का योगदान डॉ0 मनमोहन वैद्य – सुरुचि प्रकाशन दिल्ली, यह पुस्तक राष्ट्रीय स्वयंसेवकों के आजादी के आंदोलन में दिए गए योगदान का परिचय देती है।
4. राष्ट्रीय संघ चेतना मे डॉ0 हेडगेवार का योगदान – ब्रह्मानंद सरस्वती, सुरूचि प्रकाशन, दिल्ली, इस पुस्तक में डॉ0 हेडगेवार जी द्वारा जनमानस में राष्ट्रीय चेतना का विकास किया उनके द्वारा किए गए कार्यों का परिचय दिया गया।

विषय विस्तार
भारत के इतिहास, वर्तमान एवं भविष्य को जोड़कर उन्होंने भारतीय राष्ट्रीयता के मूल प्रश्न पर गहन विचार किया राजनीतिक जीवन में व्याप्त मूल्य रहित व्यवहार पद एवं प्रतिष्ठा के लिए राष्ट्रीय हितों का बलिदान एवं व्यक्ति, संप्रदाय, धर्म एवं राजनीतिक दलों के सामने राष्ट्रीय को गौण समझने की प्रवृत्ति को भारतीय जीवन की ऐसी बुराई मानते थे, इसमें राष्ट्र की अधोगती होती रही है, व्यक्ति का पहला घटक होता है जब तक उसके हृदय में राष्ट्रप्रेम की पवित्र भावना नहीं

पनपेगी तब तक विशुद्ध राष्ट्रीयता की कल्पना नहीं की जा सकती। चिंतक व सिद्धांतकार थे, चितंन व सिद्धांत था, इतिहास एवं परम्परायें थी, भविष्य की कल्पना थी परंतु इन सबको एक सूत्र मे पिरो कर एक स्वर प्रदान करने वाला एक संगठन नहीं था। डॉ0 हेडगेवार ने राष्ट्रीय जीवन की इस कमी को पहचान कर उसे पूरा करने का जो व्रत लिया था, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना उसी का परिणाम थी

डॉ0 हेडगेवार लगभग 5 वर्ष का शिक्षा समाप्त कर 1916 में कलकत्ता से नागपुर आ गए, वे कलकत्ता गए तब भी उनके मन का निश्चय था कि ''मैं कभी सरकार के सामने नहीं झुकूंगा ''और अब तो'' सरकारी मान्यता की परीक्षा की ओर मुड़ कर देखूंगा भी नहीं'' इस प्रकार की स्वाभिमानी कृति का झंडा लहराते हुए वे नागपुर लौटे। केशव राव ने बंगाल तथा पंजाब के क्रांतिकारियों से संपर्क स्थापित कर वाघी तथा नागपुर जिले के लगभग 20 तरूणों का एक पथक उत्तर की ओर भेज दिया, इसी बीच डॉ0 हेडगेवार के मन में एक बार पुणे जाकर लोकमान्य के दर्शन करने की इच्छा हुई। डॉ0 भुजे का पत्र लेकर वे लोकमान्य तिलक से मिले। लोकमान्य से भेंट करने के बाद डॉ0 हेडगेवार शिवनेरी गए इस समय प्रथम विश्व युद्ध चल रहा था। जर्मनी को पराजित कर अंग्रेज सरकार वेखटके हो गई थी।

डॉ0 हेडगेवार बंगाल एवं मध्य प्रांत की क्रांतिकारी गतिविधियों के बीच बड़ी कड़ी का काम कर रहे थे 1910 से 1915 के बीच बड़ी मात्रा में पिस्तौल एवं अन्य शस्त्र बंगाल से मध्य प्रांत भेजे जाते थे। हेडगेवार जब भी नागपुर आते थे तब अपने साथ छुपाकर शस्त्र लाया करते थे। क्रांतिकारी भूमिका के साथ–साथ उन्होंने बंगाल के दो जन आंदोलन में भी सक्रिय रूप से भाग लिया था

क्रांतिकारी तरूणों की बैठक नागपुर में तुलसी बाग, कर्नल बाग, मोहितेबाड़ा एवं मंदिरों में हुआ करती थी। शस्त्र एकत्र करने के लिए विभिन्न तरीके अपनाए गए थे। 1918 के आरंभ में क्रांति दल के तरुणों ने सैनिक वेश धारण करके नागपुर से जाने वाली गोला बारूद की पेटियों को ट्रेन से उतार लिया था। डॉ0 हेडगेवार ने कुछ तरुणों को विशेष रूप से चयन करके उन्हें स्त्री वेश धारण करवाकर कई बार शस्त्रों की चोरी करवाई थी। देश में अंग्रेजों के विरुद्ध आंदोलन के चिन्ह दिखने लगे थे। होने वाले आंदोलनों में संघ की क्या भूमिका रहेगी इसकी कल्पना ना होने के कारण पुलिस की ओर से स्थान–स्थान पर स्वयंसेवकों को सताया जाने लगा था तुम्हारा प्रमुख कौन है ? उद्देश्य क्या है? संघ के पैसे किसके पास रहते हैं ? इस प्रकार के प्रश्न पूछकर स्वयंसेवकों को सताने व डराने की घटनाएं होने लगी।

अकोला कारागृह से डॉ0 हेडगेवार 14 फरवरी 1931 को आजाद हुए। नागपुर आने के बाद उन्होंने अपनी अनुपस्थिति में हुए संघ कार्य का सूक्ष्म रीति से अवलोकन किया। इसके बाद डॉ0 साहब मुंबई गये। उनका उद्देश्य मुंबई से मित्रों के साथ वार्तालाप कर यहाँ पर भी संघ कार्य का बीजारोपण किया जाये। दूसरी तरफ विलायत में हुई गोलमेज परिषद में उठे हिंदू विरोधी स्वर का समाचार उन्हें मिल चुका था भविष्य में हिंदुओं पर आने वाले संकटों की विभिषिका उनको स्पष्ट दिखाई दे रही थी। मुंबई में डॉ0 जी श्री बाबा राव सावरकर तथा डॉ0 नारायण राव सावरकर से मिले तथा संघ कार्यो की रूपरेखा तैयार करके 14 सितंबर को नागपुर वापस आ गए। गांधी इरविन समझौता को भी 1 वर्ष हो गया फिर भी देश में विस्फोटक स्थिति बनी हुई थी। संघ के ऊपर सरकार की ओर से आपत्ती की जैसे–जैसे संभावना बढ़ने लगी वैसे–वैसे स्वयंसेवक न घबराते हुए उनका सामना करने के लिए उत्साह के साथ जुट पड़े।

1930 के सविनय अवज्ञा आंदोलन की 1932 में दूसरी किस्त थी उस समय सरकार को भय था कि प्रत्येक संस्था इसमें सहायता करेगी। अतः इन संस्थाओं को गैरकानूनी घोषित करने का निश्चय किया था। नागपुर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ही एक बलवान संस्था होने के कारण सरकार द्वारा उस पर प्रतिबंध लगाने के समाचार मिलने लगे लेकिन डॉ0 हेडगेवार को पूरा विश्वास था कि मध्य प्रांत की सरकार मूर्ख नहीं जो वह संगठन पर प्रतिबंध लगाएगी दिसंबर 1935 में पुणे में मदन मोहन मालवीय की अध्यक्षता में हिंदू महासभा का अधिवेशन हुआ। बीमार होने के बाद भी डॉ0 हेडगेवार इस सभा में उपस्थित हुए। अनेक स्थानों पर प्रवास करते हुए डॉ0 साहब वापस नागपुर आ गए। अक्टूबर 1938 में महासभा एवं आर्य समाज ने हैदराबाद के निजाम हिंदू विरोधी नीतियों के विरुद्ध संयुक्त रूप से सत्याग्रह शुरू किया था सावरकर स्वयं इसका नेतृत्व कर रहे थे।

संघ की तुलना में कांग्रेस सेवा दल का कार्य काफी पीछे था, इससे विचलित होकर कांग्रेस सेवा दल के संस्थापक अध्यक्ष डॉ0 एंड हड़ीकर ने अगस्त 1929 नागपुर की सभा में संघ पर अप्रत्यक्ष प्रहार किया। डॉ0 हेडगेवार जी का स्वास्थ्य निरंतर गिरता जा रहा था वह संघ के आधार स्तंभ थे। पुणे में दिसंबर 1939 में एक ऐसा शिविर लगाया गया जिसमें 500 लड़कों ने भाग लिया। इस समारोह में नागपुर एवं देश में अनेक महत्वपूर्ण लोग एवं संघ के दूसरे प्रांतों के नेता उपस्थित हुए थे।

डॉ0 हेडगेवार जी के जीवन का यह अंतिम संघ कार्यक्रम था। 24 दिनों से वह सैया पर थे। चिकित्सकों की कड़ी चेतावनी बावजूद नागपुर ओ0टी0सी0 मैं उपस्थित होने की जिद करने लगे अंत में उन्हें अनुमति दे दी गई। 9 जून 1940 को उन्होंने अपना अंतिम भाषण दिया, उन्होंने महासंघ की दृष्टि से यह वर्ष बड़े हर्ष का है आज अपने सामने मैं हिंदू राष्ट्र की छोटी सी प्रतिमा देख रहा हूँ।

सन्दर्भ

1. केशव संघ निर्माता – सी0पी0 मिशोंकर सुरुचि प्रकाशन, दिल्ली
2. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और स्वाधीनता आंदोलन – गुरुजी गोलवलकर सुरुचि प्रकाशन, दिल्ली।
3. आधुनिक भारत के निर्माता–राकेश सिन्हा, सुरुचि प्रकाशन, दिल्ली।
4. डॉ0 हेडगेवार संघ और स्वतंत्रता आंदोलन – नरेंद्र सहगल, सुरुचि प्रकाशन दिल्ली।